# Schul-Nachrichten.

## I. Allgemeine Lehrverfassung.

### 1. Die einzelnen Lehrgegenstände und die ihnen für die Woche zugewiesene Stundenzahl.

| Lehrgegenstände | VIa. | VIb. | Va. | Vb. | IVa. | IVb. | UIIIa. | UIIIb. | OIIIa. | OIIIb. | UIIa. | UIIb. | OII. | UI. | OI. | Zusammen |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Religion: a) evangelische | 3 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | 2 | | 17 |
| Religion: b) katholische | 3 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | | 2 | 2 | | 17 |
| Religion: c) jüdische | 1 | | | | | | 1 | | | | | | 1 | | | 3 |
| Deutsch u. Geschichtserzähl.: | 5 | 5 | 4 | 4 | 3 | 3 | 2 | 2 | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 | 3 | 3 | 47 |
| Lateinisch: | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 115 |
| Griechisch: | — | — | — | — | — | — | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 54 |
| Französisch: | — | — | — | — | 4 | 4 | 2 | 2 | 2 | 2 | 3 | 3 | 3 [2] | 3 [2] | | 28 [26] |
| Englisch: | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 2 [3] | 2 [3] | | 4 [6] |
| Hebräisch (wahlfrei): | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 2 | 2 | | 4 |
| Geschichte: | — | — | — | — | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | } 3 | } 3 | } 3 | 25 |
| Erdkunde: | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | | | 18 |
| Rechnen und Mathematik: | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 3 | 3 | 3 | 3 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 56 |
| Naturbeschreibung: | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | — | | — | — | — | — | — | 16 |
| Physik: | — | — | — | | — | | — | | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 14 |
| Schreiben: | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | | | | | | — | | — | — | | 10 |
| Zeichnen: | — | | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 wahlfrei | | | | | 18 |
| Singen: | 2 | 2 | 2 | 2 | 3 | | | | | | | | | | | 11 |
| Turnen: | 3 | 3 | 3 | | 3 | | 3 | | 3 | | 3 | | 3 | 3 | | 27 |

# I 2a. Verteilung der Lehrstunden im I. Vierteljahr 1914|15.

| Name und Stellung des Lehrers | Klassenleiter | OI | UI | OII | UIIA | UIIB | OIIIA | OIIIB | UIIIA | UIIIB | IVA | IVB | VA | VB | VIA | VIB | Summe der Stunden |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| A. Direktor Prof. Ernst Biedt | | 6 Griech. | | 3 Gesch. und Erdk. 3 Homer | | | | | | | | | | | | | 11 |
| **B. Etatsmäßige Oberlehrerstellen** | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Gustav Masuch, Professor | OI | 4 Math. 2 Phys. | 4 Math. 2 Phys. | | | 4 Math. 2 Phys. | | | | | 2 Planimetrie | 2 Planimetrie | | | | | 22 |
| 2. Karl Prokop | | 2 l. Religion 2 Hebräisch | | 2 l. Relig. | 2 l. Religion | | 2 l. Religion 1 Erdk. | | 2 l. Religion | | 2 l. Religion 2 Erdk. | | 2 l. Religion | | 3 l. Religion | | 22 |
| 3. Hans Exner | UIIIA | 3 Deut. | 3 Gesch. Erdk. | | | | | | 8 Latein 2 Gesch. 1 Erdk. | 2 Deut. | | 2 Erdk. | 2 Erdk. | | | | 23 |
| 4. Dr. Adolf Matthias | VA | | | 3 Deut. 2 Hebr. | | | 2 ev. Religion 2 Deut. | | 2 ev. Religion | | | | 4 Deut. 8 Latein | | | | 23 |
| 5. Martin Meyer | VB | | | | 2 Gesch. 1 Erdk. | | | | 2 Franz. | 2 Franz. 2 Gesch. | | | | 4 Deut. 8 Latein | 2 Erdk. | | 23 |
| 6. Dr. Bruno Engler | UIIB | 3 Gesch. u. Erdk. | | | | 8 Deut. 2 Gesch. 1 Erdk. | | | | 8 Latein 6 Griech. | | | | | | | 23 |
| 7. Fritz Schneider | UI | | 7 Latein | 6 Griech. | 7 Latein | | 6 Griech. | | | | | | | | | | 24 |
| 8. Roman Hantke | | | | 4 Math. 2 Phys. | | | 3 Math. 2 Phys. | 3 Math. 2 Phys. | 2 Math. | | 2 Math. | | 2 Math. | | 2 Math. | | 24 |
| 9. Walther Schmitz | UIIA | 2 ev. Religion 3 Deut. | | 2 ev. Relig. | 2 ev. Religion 3 Deut. 3 Frz. | | 2 Franz. | | | | 4 Franz. | | | | 3 ev. Religion | | 24 |
| 10. Paul Kleinke[1] | UIIIB | | | | 4 Math. 2 Phys. | | | | 3 Math. | 3 Math. 2 Math. 1 Erdk. | | 2 Math. | | | | 4 Rech. 2 Math. | 23 |
| 11. Dr. Richard Burandt | IVB | 3 (2) Franz. 2 (3) Englisch | | 3 (2) Franz. 2 (3) Engl. | | 3 Franz. | | 3 Franz. 2 Gesch. 1 Erdk. | | | | 4 Franz. 2 Gesch. | | | | | 24 |
| 12. Dr. Walter Bräutigam | OIIIB | 7 Latein | 6 Griech. | | | 4 Griech. | | 6 Griech. | | | | | | | | | 23 |
| 13. Franz Bösel | OIIIA | 3 Turnen | | | 3 Turn. | | 7 Latein | 8 Latein 2 Gesch. | | | | | | | | | 23 |

[1]) Vom 12. 5. 14 bis 29. 5. 14 vertreten (Ruderkursus in Wannsee) durch cand. prob. Thiel.

| Name und Stellung des Lehrers | Klassenleiter | OI | UI | OII | UIIA | UIIB | OIIIA | OIIIB | UIIIA | UIIIB | IVA | IVB | VA | VB | VIA | VIB | Summe der Stunden |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **C. Wissenschaftliche Hilfslehrer** | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Dr. Johannes Grubich | OII | | | 7 Latein | | | | 8 Latein | 2 Deut. 6 Griech. | | | | | | | | 23 |
| 2. Ernst Moritz Arndt | IVA | | | | 6 Griech. 3 Turnen | | | | | | 3 Deut. 8 Latein 3 Turnen | | | | | | 23 |
| 3. August Zieschang | VIB | | | | | 2 Homer | | 2 Deut. | | | 2 Gesch. | | | 2 Erdk. | | 5 Deut. 8 Latein 3 Turn. | 24 |
| 4. Hans Rombusch | VIA | | | | | | | | | | | 3 Deut. 8 Latein | | | 5 Deut. 8 Lat. | | 24 |
| **D. Etatsmäßige Zeichen-, Mittelschul- u. techn. Lehrerstellen** | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. August Lieske, Zeichenlehrer | | | 2 Zeichnen | | | | 2 Zeich. | 2 Zeich. | 2 Zeich. | 2 Zeich. | 2 Zeich. 2 ev. Religion | 2 Zeich. 2 ev. Religion | 2 Zeich. 2 ev. Religion | 2 Zeich. 2 ev. Religion | 2 Schreib. | | 24 |
| 2. Adolf Seiffert, techn. Lehrer | | | | | 3 Chorgesang 2 Schreiben | | | | | | | | 2 Gesg. 2 Schrb. | 2 Math. 2 Gesg. 2 Schrb. 3 Turnen | 2 Gesg. 3 Turn. | 2 Gesg. 2 Schrb. | 27 |
| 3. Oskar Wernicke, Mittelschullehrer | | | | | | | 3 Turnen | | 3 Turnen | | 2 Rechn. | 2 Rechn. | 4 Rechn. | 4 Rechn. | 4 Rechn. | 2 Erdk. | 24 |
| 4. Mittelschullehrerstelle unbesetzt, vertreten durch C 4 | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| **E. Probekandidaten** | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Dr. Herbert Müller | | | | | | (4 Griech.) | (2 ev. Relig.) | | | | | | | | (3 ev. Relig.) | | (9) |
| 2. Dr. Albert Zenker | | | (2 Phys.) | | (2 Phys.) | | | | | | (2 Planimetrie) | | | | (2 Math.) | | (8) |
| 3. Dr. Friedrich Fenner | | | | (2 Hom.) | | | (6 Gesch.) | | | | | | | | | | (8) |
| **F. Nichtetatsmäßige sonstige Hilfskräfte.** | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Dr. Jakob Rohn, jüd. Religionslehrer | | | 1 jüdische Religion | | | | | 1 jüdische Religion | | | | | 1 jüdische Religion | | | | 3 |

# I 2b. Verteilung der Lehrstunden vom 10. 8. 14 bis 27. 3. 15.

(Vom 4. 8. bis 7. 8. 14. einschl. — am 8. 8. fiel der Unterricht wegen einer Notprüfung aus — wurde nach einem vorläufigen Plan unterrichtet.)

| Namen und Stellung des Lehrers | Klassenleiter | I | OII | UII | OIIIA | OIIIB | UIIIA | UIIIB | IVA | IVB | V | VI | Summe der Stunden |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| A. Direktor Professor Ernst Viedt | | 6 Griech. | 3 Gesch. Erdkunde 2 Homer | | | | | | | | | | 11 |
| B. Oberlehrer | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Gustav Masuch, Professor | I | 4 Math. 2 Physik | 4 Math. 2 Physik | | 3 Math. 2 Physik | | 3 Math. | | | | | | 20 |
| 2. Karl Prokop, Professor [1]) | OIII | 2 k. Rel. | 2 kath. Rel. | | 2 kath. Rel. 8 Latein | | 2 kath. Rel. | | 2 kath. Rel. | | 2 k. Rel. | 2 k. Rel. | 22 |
| 3. Dr. Adolf Matthias [3]) | V | 3 Deutsch | | | 2 ev. Rel. | | 2 ev. Rel. | | 2 Geschichte | | 3 Deutsch 8 Latein | 2 ev. Rel. | 22 |
| 4. Martin Meyer [3]) | IV | | | 2 Gesch. 1 Erdkunde | 2 Französisch | | 2 Französisch 2 Geschichte | | 3 Deutsch 8 Latein | | | | 20 |
| 5. Dr. Bruno Engler [4]) | UIII | 3 Gesch. Erdkunde | 3 Deutsch | | | | 8 Latein 6 Griechisch | | | | | | 20 |
| 6. Fritz Schneider [5]) | OII | 7 Latein | 4 Griech. 7 Latein | | 2 Deutsch | | | | | | | | 20 |
| 7. Walther Schmitz [6]) | UII | 2 ev. Rel. 3 Franz. | 2 ev. 3 Franz. | Rel. 3 Deutsch 3 Franz. | | | | | 4 Französisch | | | | 20 |
| 8. Paul Klemke [7]) | | | | 4 Math. 2 Physik | 1 Erdkunde | | 2 Naturk. 1 Erdkunde | | 2 Planimetrie 2 Rechnen 2 Naturk. | | 4 Rechn. | 2 Naturk. | 22 |
| 9. Dr. Richard Burandt [8]) | | | | | | | | | | | | | |
| 10. Dr. Walter Bräutigam [9]) | | | | | | | | | | | | | |
| 11. Franz Bösel [10]) | | 3 Turnen | 3 Turnen | 7 Latein | 6 Griechisch 2 Geschichte | | | | | | | | 21 |
| C. Wissenschaftl. Hilfslehrer | | | | | | | | | | | | | |
| August Zieschang [11]) | | | | 6 Griech. | | | 2 Deutsch | | | | | 4 Deutsch 8 Latein | 20 |
| D. Zeichen-, Mittelschul-, techn. Lehrer | | | | | | | | | | | | | |
| 1. August Lieske, Zeichenlehrer [12]) | | 2 Zeichnen | | | 1 Zeichnen | 1 Zeichnen | 1 Zeichnen | 1 Zeichnen | 2 ev. Religion 1 Zeichnen | 1 Zeichnen 2 Rechnen 2 Naturk. | a 1 Zchn | b. 1 Zchn | 18 |
| | | | | | | 2 Schreiben | | | | | | | |
| 2. Adolf Seiffert, techn. Lehrer [13]) | VI | | | 3 Chorgesang | | | | | 1 Turnen 1 Turnen | 1 Turnen | 2 Schreiben 2 Naturk. 2 Gesang 1 Turnen a 1 Tur. | b. 1 Tur. | 2 Schreib. 2 Gesang 3 Turnen | 22 |
| 3. Oskar Wernicke, Mittelschullehrer [14]) | | | | 3 Turnen | 1 Turnen 1 Turnen | 1 Turnen | 1 Turnen 1 Turnen | 1 Turnen | 2 Erdkunde | | 2 ev. Rel. 2 Erdk. | | 4 Rechn. 2 Erdk. | 21 |
| E. Probekandidaten | | | | | | | | | | | | | |
| 1. Dr. Herbert Müller [15]) | | | | | | | | | | | | | |
| 2. Dr. Friedrich Fenner [16]) | | | | | | | | | | | | | |
| F. Sonstige Hilfskräfte | | | | | | | | | | | | | |
| Dr. Jakob Kohn, jüd. Religionslehrer | | 1 jüdische Religion | | | | 1 jüdische Religion | | | | | 1 jüd. Religion | | 3 |

1) Vom 1. 9. bis 30. 9. 14 8 Latein OIIIa S. E. 2.
2) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 2 Geschichte IVa S. B. 10.
3) Vom 1. 9. bis 30. 9. 14 8 Lat. IVa S. E. 1. Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 2 Franz. OIIIa, vom 15. 10. bis 6. 11. 14 2 Franz. UIIIa S. B. 9. Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 3 Deutsch IVa S. B. 10.
4) Vom 15. 10. bis 6. 11. 14 6 Griechisch UIIIa S. B. 10.
5) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 2 Deutsch OIIIa S. B. 10.
6) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 4 Französisch IVa S. B. 9.
7) Vom 10. 8. bis 14. 9. 14 2 Rechnen und 2 Naturkunde IV S. 12.
8) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 2 Engl. I, 2 Engl. OII, 2 Franz. u 2 Gesch, 1 Erdk. OIIIb, 4 Franz. u. 2 Erdk. IVb; vom 15. 10. bis 6. 11. 14 noch dazu 2 Deutsch u. 2 Franz. UIIIb.
9) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 2 Deutsch, 6 Griechisch OIIIb, 3 Deutsch und 2 Geschichte IVb; vom 15. 10. bis 6. 11. 14 noch dazu 6 Griechisch UIIIb.
10) Vom 3. 9. bis 6. 11. 14 6 Griechisch, 2 Geschichte OIIIa S. B. 9 und B. 10.
11) Vom 15. 10. bis 6. 11. 14 2 Deutsch UIIIa S. B. 9.
12) Vom 15. 9. 14 ab.
13) Vom 15. 9. 14 ab; vorher 3 Turnen in IVa und b und 3 Turnen in Va und b, dazu 2 Schreiben III/IV S. 12.
14) Vom 15. 9. 14 ab; vorher 3 Turnen OIIIa und b und 3 Turnen UIIIa und b, dazu 2 evangelische Religion IV S. 12.
15) Vom 1. 9. bis 30. 9. 14 8 Latein IVb.
16) Vom 1. 9. bis 30. 9. 14 8 Latein OIIIb.

## I 3. Aus den Lehr- und Prüfungsaufgaben der Klassen I, OII und UII.

### a) Deutsche Aufsätze.

#### Prima.

1. a) Charakteristik Kreons (Nach Grillparzers „Medea".) (OI). b) Über den Gebrauch der Fremdwörter. (UI). 2. a) Kann uns zum Vaterland die Fremde werden? (OI). b) Schiller, der Dichter der Freiheit (mit besonderer Berücksichtigung seiner Jugenddramen). (UI). 3. Mit welchem Rechte sagt Schiller in der „Braut von Messina:" „Aber der Krieg auch hat seine Ehre, der Beweger des Menschengeschicks?" (Klassenaufsatz.) 4. Der Entwicklungsgang der religiösen Anschauung Goethes auf Grund der Oden „Prometheus, Ganymed, Grenzen der Menschheit und das Göttliche." — 5. Wie löst der erste Akt von Goethes Schauspiel „Götz von Berlichingen" die Aufgabe der Exposition eines Dramas? — 6. (OI) Es ist die Rede dreierlei: ein Licht, ein Schwert, ein Arzenei. (Klassenaufsatz). (UI) Drei Blicke tu zu Deinem Glück: Blick aufwärts, vorwärts und zurück. (Klassenaufsatz.) 7. Was erfahren wir in dem ersten Akt der „Piccolomini" über Wallenstein? (Schiller). — 8. Klassenaufsatz: Vergessen ein Fehler, eine Tugend, ein Glück.

Aufsatzthema für die zweite Notprüfung: Aber der Krieg auch hat seine Ehre, der Beweger des Menschengeschicks.

Abiturientenaufsatz: Ans Vaterland, ans teure, schließ dich an,
das halte fest mit deinem ganzen Herzen!
(Schiller: Wilhelm Tell II, 1)

#### Obersecunda.

1. Der Mensch, ein Untergebener und ein Herr seiner Zeit. — 2. Inwiefern ist Siegfried seinen Taten nach ein übermenschlicher, in seinen Empfindungen aber ein echt menschlicher Held? 3. (Klassenaufsatz) Der Krieg ist schrecklich wie des Himmels Plagen, doch er ist gut, ist ein Geschick wie sie. 4. Hêr Walther von der Vogelweide, swer des vergaeze, der taet mir leide. 5. (Klassenaufsatz) a) Stultus und der Stolz wachsen an einem Holz. b) Warum finden wir unter den Liedern des Minnesanges so viele Preisgesänge auf den Frühling? 6. Welche Umstände machen den Grafen Egmont zum Liebling der Niederländer? 7. Wie treten wir mit den Streitern auf dem Schlachtfelde in eine geistige Gemeinschaft? 8. (Klassenaufsatz) Wer nicht vorwärts geht, der kommt zurücke.

#### Untersecunda.

UIIA: 1. Was treibt uns in die Ferne? UIIB: 1. Friedrich Wilhelms I. Verdienste um Preußen. UIIA: 2. Das Feuer, ein guter Diener, aber ein böser Herr. (Klassenaufsatz.) UIIB: 2. Warum finden wir so viele Städte an Flußläufen? oder: Jeder ist seines Glückes Schmied. (Klassenaufsatz.) UIIA und B: 3. Wann ertönt die Glocke? 4. Mobilmachung 1914 (Erlebtes und Beobachtetes). 5. Wie wir den Sieg bei Tannenberg feierten. (Klassenaufsatz.) 6. Welches war der Zustand Frankreichs vor dem Auftreten der Jungfrau von Orleans? 7. Können wir, die wir daheim geblieben sind, zu einer glücklichen Beendigung des Krieges beitragen? (Klassenaufsatz.) 8. Berufung, Schuld und Sühne der Jungfrau von Orleans. 9. (Klassenaufsatz.) Bedrückung der Schweiz durch die Landvögte. (Nach Schillers Wilhelm Tell.)

## b) Lektüre.

### Prima.

**Deutsch.** OI: Goethes „Iphigenie". Schiller: Über den Grund des Vergnügens an tragischen Gegenständen. UI: Klopstocks Oden und einige Abschnitte aus dem Messias. OI und UI: Hebbel: Agnes Bernauer. Goethe: Götz von Berlichingen. Goethes Gedichte: Prometheus, Ganymed, Grenzen der Menschheit, das Göttliche, Gesang der Geister über den Wassern, Seefahrt, Mahomeds Gesang. Schiller: Wallenstein (3 Teile). Abschnitte aus Lessings: „Hamburgische Dramaturgie". Shakespeare: „Julius Cäsar". Schiller: „Don Carlos".

**Lateinisch.** Bis 2. 7.: OI: Tac. Annales I, 21—30; 49—52; 55—67. Horaz: Carm. III, 1; 2; 3 (1—8, 69—72); 6; 8; 9; 13; 21; 26; 29; 30. IV, 2. UI Cic.: In Verrem IV, § 1—36. Horaz, Carm. I, 1, 2, 3, 4, 6, 7, 9, 11. Vom 4. 8. 14 ab: OI und UI: Cic. in Verrem IV, § 37—43; 64—66. V, § 1—17; 184—Schluß. Cic. de officiis I m. Auswahl. Horaz: Carm. I, 10, 12, 14, 18, 21, 22, 24, 31, 32, 34, 35, 37. II, 1—3, 6, 10, 13, 14, 15, 17, 20. IV, 2, 3, 4, 8. Carm. Saec. Epod. 2, 7. Livius: wöchentlich 1 Stunde unvorb. Uebers. aus der 3. Dekade.

**Griechisch.** 1. Bis 2. 7. 14: OI: Plato, Protagoras cap. 1—16. Ilias XIII, 1—155; XIV, 1—291; XV, 1—243; XVI, 1—167, 198—283. UI: Plato, Apologie cap. 1—15. Ilias I, 1—429, 496—535. 2. Vom 4. 8. 14 ab: I. Plato. Apologie cap. 16 ff. Wilamowitz, Teil 2, VII, 4, X, 1—3. Demosthenes, *περὶ τῶν ἐν Χερρονήσῳ*. Ilias XVI, 777—867, XVII, 1—139, 651—734, XVIII. 1—476. Sophocles, Antigone.

**Französisch.** Molière, L'Avare; Aulard, Histoire politique de la révolution française; Engwer, Choix de poésies françaises: La Fontaine Nr. 1—5, 11, 14; Béranger Nr. 3, 4 u. 5; Lamartine, Nr. 6, 9, 11 u. 12.

**Englisch.** (Bis 6. 11. 14). H. W. Longfellow, Evangeline.

### Obersecunda.

**Deutsch.** Das Nibelungenlied. Volkers Nachtgesang. Luthers Schriften. Literarische Proben. Gedichte Walthers von der Vogelweide. Einige Gedichte Goethes und Schillers Goethes „Egmont" und „Hermann und Dorothea". Kleists „Hermannsschlacht". (Privatlektüre.)

**Lateinisch.** Cicero pro Qu. Ligario und Cato maior de senectute ohne die §§ 12—15. Livius: Je 1 Stunde wöchentlich unvorb. Übersetzen aus der 3. Dekade. Vergil: Bucolica. Bis 2. 7. 14: I, VII, X. Vom 4. 8. 14 ab: V, 1—44, IX. Georgica II, 136—166. Aeneis I, 1—64, II, 1—56, 199—335, 634—Schluß, III, 192—265.

**Griechisch.** Xenophons Hellenika I, cap. 1—3, cap. 4, § 29—Schluß, cap. 7, V, cap. 1, § 25—Schluß, cap. 2, § 25—Schluß. Herodot VII § 198—218, § 225—234, 238, VIII, § 83—96, v. Wilamowitz, Griech. Lesebuch I. Teil, Stück 4: Der Jäger von Dion v. Prusa § 1—26. Odyssee IX, X, 1—76, XIII, XIV, XV, 301—492.

**Französisch.** Pailleron, Le Monde où l'on s'ennuie; Comte D'Hérisson, Journal d'un officier d'ordonnance.

**Englisch.** (Bis 6. 11. 14). Abschnitte aus dem Lehrbuche von Tendering.

### Untersecunda.

**Deutsch.** Schillers Glocke, Jungfrau von Orleans und Wilhelm Tell. Dichtungen der Befreiungskriege. Raabes Schwarze Galeere. Ausgewählte Stücke aus dem Lesebuche.

**Lateinisch.** Cicero, de imp. Cn. Pomp. Livius, Vorwort, I, 4, 6, § 3 und 4, 7, § 1—3, 8—14, § 3, 15, § 6—16, § 8. Ovid (Auswahl von Sedlmayer), Metamorphosen: Abschnitt 1—5, 26, 29, 30. Elegien: I, 4; II, 5; III, 8 und 9.

**Griechisch.** Xenophon, Anabasis V; VII, cap. 1. Odyssee I, 1—325; V ganz.

**Französisch.** Daudet, Le petit Chose.

**Mathematische Aufgaben für die zweite Notreifeprüfung.**

1. Jemand will n = 20 Jahre lang zu Anfang eines jeden Jahres eine gleich große Summe auf Zinseszins anlegen. Das dadurch angesammelte Kapital soll noch n = 10 Jahre lang auf Zinseszins ausstehen, damit es auf die Höhe von c = 18 000 Mark anwachse. Wie groß ist jene jährlich angelegte Summe, wenn 4 % gerechnet werden? 2. Zwei Kräfte a = 11,3 kg und b = 14,57 kg wirken unter einem Winkel $\gamma = 27^0\ 13'$ auf einen Punkt. Wie groß ist die Kraft, die diesen Kräften das Gleichgewicht hält, und welche Winkel bildet sie mit den gegebenen Kräften?

**Mathematische Aufgaben für die Reifeprüfung zu Ostern 1915.**

1. Für welchen Punkt einer Parabel bildet die Tangente mit der Achse einen Winkel von $45^0$? Wie groß ist der Inhalt des Parabelsegments, welches von der durch diesen Punkt gehenden, zur Achse senkrechten Sehne begrenzt wird? Wie groß ist der Inhalt des Segmentes, das von der durch den Scheitel der Parabel jener Tangente parallel gezogenen Sehne begrenzt ist? 2. Ein 45 m hoher Turm ist vom Ufer eines Flusses 72 m entfernt. Die Breite des Flusses erscheint von der Spitze des Turms unter einem Winkel $\alpha = 12^0\ 18'\ 30''$. Wie breit ist der Fluß? 3. Welcher Zentriwinkel gehört zu einem Kugelsegment, dessen Gesamtoberfläche gleich dem größten Kugelkreise ist? 4. Vor einem sphärischen Hohlspiegel, dessen Brennweite 40 cm beträgt, befinden sich ein Gegenstand und sein Bild. Vergrößert man die Entfernung des Gegenstandes vom Spiegel um 180 cm, so nähert sich das Bild dem Spiegel um 20 cm. Wie weit waren Gegenstand und Bild vor der Verschiebung vom Hohlspiegel entfernt?

---

Von der Teilnahme am evangelischen und am katholischen Religionsunterricht war niemand befreit.

## I 4. Technischer Unterricht.

a) Turnen. Das Gymnasium besuchten im Sommer 416, im Winter 353 Schüler. Von diesen waren befreit

| vom Turnunterricht überhaupt: | von einzelnen Übungsarten: |
|---|---|
| a) auf Grund eines ärztlichen Zeugnisses im S. 22, im W. 18 | im S. 2, im W. 1 |
| b) aus anderen Gründen . . . . . im S. 27, im W. 14 | im S. 0, im W. 3 |
| Zusammen im S. 49, im W. 32 | im S. 2, im W. 4 |

also von der Gesamtheit der Schüler im S. 12 %, im W. 10 %.

Von den Schülern unter b mußten die meisten täglich die Bahn zur Her- und Heimfahrt benutzen.

Im Sommer wurde bei gutem Wetter der Turnplatz, bei ungünstigem Wetter und im Winter die Turnhalle benutzt. — Turnspiele wurden im Rahmen des Unterrichts im Sommer

und Winter geübt. Den Schülern der Klassen I—OIII stand während des Sommers der Turnplatz zur Pflege des Turnspiels zu bestimmten Stunden in der Woche zur Verfügung. Die Beteiligung daran betrug durchschnittlich 20 Schüler. — Einer Schülerriege des hiesigen Flottenvereins gehören jetzt 13 Schüler an. — 10 Schüler nehmen an den Veranstaltungen des „Wandervogels E. V.", Ortsgruppe Hohensalza, teil. — Besondere turnerische Veranstaltungen hat die Anstalt im Berichtsjahre nicht geboten. Im Winter wurde die Eisbahn von den Schülern benutzt.

Die durch den Ministerialerlaß vom 13. 7. 1910 angeordneten täglichen Freiübungen wurden auf dem Schulhofe ausgeführt, soweit nicht widrige Witterungsverhältnisse den Ausfall bedingten.

b) Zeichnen. I/II (wahlfrei). Im wahlfreien Zeichnen wurden die Schüler der Klassen UII bis OI zu einer Abteilung vereinigt. Die Gesamtzahl der Teilnehmer betrug im Sommerhalbjahr 8, im Winterhalbjahr 6. Geübt wurde im Freihandzeichnen das Zeichnen und Malen nach der Natur, im Linearzeichnen das Maßstabzeichnen und die Perspektive.

c) Singen. Sexta und Quinta. Noten und Wert derselben, Taktarten, rhythmische Übungen, Treffübungen aller Art unter besonderer Berücksichtigung der Ganz- und Halbstufen, Dur- und Mollterz, Dur- und Mollsext, Tonbildungs- und dynamische Übungen, Musikdiktate, ein- und mehrstimmige Lieder und Choräle. In V einiges aus der Musikgeschichte (Entwicklung der Musik, Klassiker, Romantiker, Komponisten der Neuzeit.) Chorgesang. Daran nahmen 100 bis 110 Schüler der Quinta bis Prima teil, und zwar war je eine Stunde dem Tenor und Baß bezw. Sopran und Alt und eine dem Gesamtchor zugewiesen.

## 15. Übersicht der gebrauchten Lehrbücher.

| Fach. | Titel. | Klasse. | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **Religion,** a) evang. . . . | Das neue Testament . . . . . | — | — | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | C. O. Schäfer u. A. Krebs, bibl. Lesebuch Ausgabe C. I | — | — | IV | UIII | OIII | UII | — | — |
| | Halfmann-Köster, Hilfsbuch . . . . . | VI | V | (IV) | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Nov. test. gr. . . . . | — | — | — | — | — | — | — | I |
| b) kath. . . . | Bibl. Geschichte nach Schuster, Ausgabe von Mey | VI | V | IV | UIII | OIII | — | — | — |
| | Katechismus von Deharbe Nr. 3 . . . . . | VI | V | — | — | — | — | — | — |
| | Katechismus von Deharbe Nr. 2 . . . . . | — | — | IV | UIII | OIII | — | — | — |
| | G. Rauschen, Lehrbuch der kathol. Religion *) | — | — | — | — | — | UII | OII | I |
| c) jüd. . . . . | Levy, Biblische Geschichte . . . . . | | | | | | | | |
| | Bäck, Geschichte des jüd. Volkes . . . . . | | | | | | | | |
| **Deutsch.** | Hopf und Paulsiek-Muff, Lesebuch . . . . . | VI | V | IV | — | — | — | — | — |
| | Hopf und Paulsiek-Kinzel-Scheel, Lesebuch . . | — | — | — | UIII | OIII | UII | OII | I |
| **Latein.** | Ellendt-Seyffert-Fries, Grammatik . . . . | — | — | — | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Ostermann — Müller, Übungsbuch A . . . . | VI | V | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| **Griechisch.** | Kaegi, Kurzgefaßte Schulgrammatik . . . . | — | — | — | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Kaegi, Übungsbuch Teil I bezw. II . . . . | — | — | — | UIII | OIII | UII | OII | — |
| | v. Wilamowitz-Moellendorff, griech. Lesebuch I u. II | — | — | — | — | — | — | OII | I |
| **Französisch.** | Plötz-Kares, Elementarbuch E. . . . . | — | — | IV | UIII | — | — | — | — |
| | Plötz-Kares, Sprachlehre . . . . . | — | — | — | — | OIII | UII | OII | I |
| | Plötz-Kares, Übungsbuch E. . . . . | — | — | — | — | OIII | UII | OII | I |
| **Hebräisch** (wahlfrei). | Strack, Grammatik . . . . . | — | — | — | — | — | — | OII | I |
| | Strack, Vokabularium . . . . . | — | — | — | — | — | — | OII | I |
| | Hebr. Bibel . . . . . | — | — | — | — | — | — | — | I |
| **Englisch** (wahlfrei). | Tendering, Lehrbuch der engl. Sprache, Ausg. B | — | — | — | — | — | — | OII | I |
| **Geschichte u. Geographie.** | Jänicke, Lehrbuch . . . . . | — | — | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Putzger, Historischer Schulatlas . . . . . | — | — | — | — | OIII | UII | OII | I |
| | Seydlitz, Schulgeogr. Ausg. G. . . . . | — | V | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Diercke, Schulatlas für höhere Lehranstalten (Kleine Ausgabe C) . . . . . | VI | V | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| **Rechnen u. Mathematik.** | Müller-Pietzker Rechenbuch, Ausgabe A . . | VI | V | (IV) | — | — | — | — | — |
| | Lieber und v. Lühmann, Elementarmathematik . . . . . | — | — | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Gauß, Logarithmentafeln . . . . . | — | — | — | — | — | UII | OII | I |
| | Bardey-Pietzker-Presler, Aufgabensammlung . | — | — | — | UIII | OIII | UII | OII | I |
| **Naturkunde.** | Bail, Leitfaden für Botanik . . . . . | VI | V | IV | UIII | — | — | — | — |
| | Bail, Leitfaden für Zoologie . . . . . | VI | V | IV | UIII | OIII | — | — | — |
| | Trappe, Schulphysik . . . . . | — | — | — | — | — | UII | OII | I |
| **Gesang.** | Sering, Chorbuch . . . . . | (VI) | (V) | IV | UIII | OIII | UII | OII | I |
| | Herrmann u. Wagner, Schulgesangbuch, Ausg. B. | VI | V | — | — | — | — | — | — |

*) Wird eingeführt mit Beginn des Schuljahres 1915/16 (bisher: König, Lehrbuch für den katholischen Religionsunterricht).

# II. Verfügungen von allgemeiner Bedeutung.

1. Am 18. 4. 1914 ist auf die Bedeutung, welche die denkwürdigen Ereignisse des Jahres 1864 für die Entwickelung unseres Vaterlandes gehabt haben, hinzuweisen.

2. Herr Oberlehrer Prokop erhält durch Erlaß vom 1. 7. 1914 den Charakter als Professor.

3. Wenn ein Schüler von einer höheren Lehranstalt des Herzogtums Braunschweig auf eine öffentliche höhere Lehranstalt in Preußen und umgekehrt innerhalb eines Schulvierteljahrs übergeht, so wird das Schulgeld für dieses Vierteljahr stets nur bei der Anstalt, die er verläßt, erhoben.

4. Anläßlich der Sr. Majestät zum Regierungsjubiläum dargebrachten Huldigung der deutschen Ruderer werden „als Anerkennung für das Geleistete und als Ansporn für die Zukunft" auch der hiesigen Anstalt zwei Kaiserbilder, je eins für den Schülerruderverein und für seinen Protektor, überwiesen.

5. Nach Ausbruch des Krieges werden Notprüfungen angeordnet für Schüler, welche in das Heer eintreten.

6. Es wird bestimmt, daß Schülern der UII bis UI, welche während des Krieges in das Heer eintreten, unter gewissen Voraussetzungen die Reife für die nächsthöhere Klasse zugesprochen werden kann, auch wenn sie ihrer Klasse noch nicht ein volles Jahr angehört haben.

7. Angehörige der Staaten, welche gegen uns Krieg führen, dürfen bis auf weiteres weder als Lehrer noch als Schüler zugelassen werden.

8. Erlaß über die militärische Vorbereitung der Jugend vom 16. Lebensjahre an.

9. Im Interesse der Landesverteidigung soll, soweit angängig, Zechenkoks als Brennstoff benutzt werden.

10. Am 1. 10. 1914 wird in Berlin eine Zentralstelle für den naturwissenschaftlichen Unterricht eingerichtet, die auch als Prüfungs- und Auskunftsstelle für naturwissenschaftliche Lehrmittel dienen soll. Das Geschäftszimmer dieser Zentralstelle befindet sich vom 1. 1. 15 ab in Berlin W. 35, Potsdamer Straße 120.

11. Auch Schüler, welche in der freiwilligen Krankenpflege im Etappengebiet verwendet werden sollen, können zu den Notreifeprüfungen zugelassen werden. Ebenso kann ihnen mit den gleichen Vergünstigungen wie den sonstigen Kriegsfreiwilligen die Reife für die nächsthöhere Klasse zuerkannt werden.

12. Auf die Wichtigkeit der Pilze für die Volksernährung ist hinzuweisen.

13. Das Verständnis für die Notwendigkeit der Maßnahmen, die zur Sicherung der Lebensmittelversorgung getroffen worden sind, ist zu wecken und zu erweitern.

14. Durch Belehrung und Mahnung soll darauf hingewirkt werden, daß die Bevölkerung die noch zurückgehaltenen Goldstücke — zum Besten unseres Vaterlandes — der Reichsbank zuführt und gegen Papiergeld umtauscht.

15. In Bezug auf militärische Nachrichten ist die größte Verschwiegenheit und Vorsicht zu beobachten.

16. Für die Aufnahme in den zweijährigen höheren Lehrgang der Kgl. Gärtnerlehranstalt in Berlin-Dahlem wird neben vierjähriger gärtnerischer Praxis der Nachweis der Berechtigung zum einjährig-freiwilligen Militärdienst oder einer gleichwertigen wissenschaftlichen Vorbildung gefordert. An der Kgl. Lehranstalt für Obst- und Gartenbau in Proskau und an der Kgl.

Lehranstalt für Wein-, Obst- und Gartenbau in Geisenheim a. Rh. genügt zur Aufnahme in den ebenfalls zweijährigen höheren Lehrgang der Nachweis der Reife für die OIII eines Gymnasiums oder die Reife für die entsprechende Klasse einer anderen höheren Lehranstalt neben zweijähriger gärtnerischer Praxis. Für die Zulassung zur staatlichen Fachprüfung für Garten-, Obst- und Weinbautechniker an den genannten Anstalten wird in allen Fällen der Besitz des Berechtigungsscheines für den einjährig-freiwilligen Militärdienst verlangt.

17. Das Zentralinstitut für Erziehung und Unterricht wird seine dauernde Ausstellung für Erziehungs- und Unterrichtswesen in den neuen Räumen — Berlin W. 35, Potsdamer Straße 120 — am 1. 3. 1915 mit einer Sonderausstellung „Schule und Krieg" eröffnen.

18. Bei der Versetzung zu Ostern 1915 soll auf die durch den Krieg herbeigeführten Störungen und Ablenkungen zugunsten der Schüler Rücksicht genommen werden.

19. Des hundertjährigen Geburtstages Bismarcks, soll, da dieser Geburtstag in die Osterferien fällt, bereits kurz vor Beginn der Ferien in den Schulen in angemessener Weise gedacht werden.

20. Ferienordnung für das Schuljahr 1915:

| Schulschluß: | Schulanfang: |
|---|---|
| Zu Ostern 1915: | |
| Sonnabend, 27. März (12 Uhr) | Dienstag, 13. April. |
| Zu Pfingsten 1915: | |
| Freitag, 21. Mai (12 Uhr) | Freitag, 28. Mai. |
| Zu Johannis 1915: | |
| Sonnabend, 3. Juli (12 Uhr) | Donnerstag, 5. August. |
| Zu Michaelis 1915: | |
| Mittwoch, 29. September (12 Uhr) | Donnerstag, 14. Oktober. |
| Zu Weihnachten 1915: | |
| Mittwoch, 22. Dezember (12 Uhr) | Dienstag, 4. Januar 1916. |

# III. Chronik der Anstalt.

Das Schuljahr 1914 begann am 16. April.

Nachdem zum 1. 4. 1899 die UIII, zum 1. 4. 1908 die VI, zum 1. 4. 1911 die V und die OIII, zum 1. 4. 1913 die IV geteilt worden waren, gelang zum 1. 4. 1914 die Teilung der I und die der UII. Von diesem Zeitpunkt ab hat das Gymnasium Doppelklassen von VI bis UII mit einem Aufbau von je einer OII, UI und OI oder mit anderen Worten: von da ab ist dem Gymnasium ein Progymnasium angegliedert. In Verbindung mit den neuen Teilungen wurde eine 13. Oberlehrerstelle geschaffen, die Herr Bösel erhielt. Außerdem wurden die Herren wissenschaftlichen Hilfslehrer Zieschang und Rombusch zum 1. 4. 1914 an die Anstalt berufen. Es wurde also auch die Zahl der Stellen für wissenschaftliche Hilfslehrer um eine vermehrt. Herrn Rombusch wurde die Verwaltung einer Mittelschullehrerstelle i. V., die vorher Herr Arndt gehabt hatte, übertragen, während dieser eine der etatsmäßigen Stellen für wissenschaftliche Hilfslehrer erhielt.

Für Herrn Oberlehrer Dr. Leo*) der, wie schon im vorigen Jahresbericht erwähnt worden ist, nach Schluß des Schuljahres 1913 an das Gymnasium zu Fraustadt überging, wurde der Anstalt zum 1. 4. 14 Herr Oberlehrer Dr. Burandt, vorher am Gymnasium zu Fraustadt, überwiesen.

Die Herren Dr. Zenker (zugleich am hiesigen Lyzeum beschäftigt) und Dr. Fenner begannen hier am 1. 4. 14 ihr Probejahr. So waren an der Anstalt im ersten Viertel des Schuljahres 1914 25 Herren beschäftigt und bestanden 15 Klassen an ihr. Auch der Erweiterungsbau und der Umbau des alten Gymnasiums waren tüchtig fortgeschritten, und wir durften hoffen, im Oktober 1914 die neue Anstalt ganz vollendet zu sehen. Da kam der Krieg, der dem deutschen Reiche von seinen zahlreichen Gegnern aufgezwungen wurde.

Herr Dr. Grubich war zum 1. 7. 1914 an das A. V. G. zu Posen als Oberlehrer berufen worden, und die durch ihn hier verwaltete Hilfslehrerstelle wurde bis zum Schlusse des Schuljahres nicht besetzt. Die Herren Oberlehrer Exner, Oberlehrer Hantke, Arndt, Rombusch und Dr. Zenker folgten dem Rufe des obersten Kriegsherrn und traten in das Heer ein. Ersatz für sie konnte der Anstalt nicht gewährt werden. Herr Zeichenlehrer Lieske wurde ebenfalls in das Heer eingestellt, aber am 18. 8. 14 wieder entlassen. Wegen schwerer Krankheit seiner Gattin mußte er dann noch für mehrere Wochen beurlaubt werden und nahm erst nach deren Tode, am 15. 9. 14 seinen Unterricht wieder auf. Mit seiner Wiedereinberufung mußte stets gerechnet werden, doch erfolgte sie bis zum Schlusse des Schuljahres nicht.

Auch Herr Dr. Fenner, der zunächst einberufen worden war, wurde nach kurzer Zeit, am 25. 8. 1914, wieder aus dem Heeresdienst entlassen. Er war dann an der Anstalt noch bis zum Schluß des Sommerhalbjahrs tätig. Zum 1. 10. 14. wurde er an die Luisenschule zu Posen versetzt.

Herr Zieschang hatte die Sommerferien in Straßburg verbracht, konnte wegen der durch den Kriegsausbruch veranlaßten Zugschwierigkeiten zum Schulbeginn nicht hier eintreffen und übernahm seinen Unterricht erst am 15. 8. 14. In der Hauptsache wurde er während seiner Abwesenheit von Herrn Dr. Müller vertreten. Dieser letztere blieb noch bis zur Beendigung seines Probejahres hier und wurde zum 1. 10. 14 dem Gymnasium zu Nakel überwiesen.

Da die Herrn Oberlehrer Dr. Burandt und Oberlehrer Dr. Bräutigam nach den ihnen anfangs erteilten Auskünften eine schnelle Einberufung zu erwarten hatten, so wurden sie zunächst nur aushilfsweise beschäftigt und erteilten erst vom 3. 9. 14 ab festen Unterricht. Am 16. 11. 14 wurden sie in das Heer eingestellt. Es konnte hiernach nach der Mobilmachung zum Beginn des zweiten Schulvierteljahrs mit Bestimmtheit nur etwa auf die Hälfte der Herren, die bis dahin den Lehrkörper gebildet hatten, gerechnet werden. Deshalb wurden aus den 15 Klassen, die im Anfang des Schuljahres bestanden, durch Zusammenlegung 8 gebildet (I, O II, U II, O III, U III, IV, V, VI) und mit diesen am 4. 8. 14 der Unterricht begonnen. Dadurch, daß Herren, auf die zunächst nicht gerechnet werden konnte, später noch für eine beschränkte Zeit oder auch bis zum Schlusse des Schuljahres eintraten, wurde es möglich, einzelne von den genannten Grundklassen in einigen Fächern für eine gewisse Zeit zu teilen. Das Nähere darüber ist unter I 2 b angeführt. Die Möglichkeit, zu teilen, war aber immer nur

*) Er fiel im Kampfe für das Vaterland am 19. 2. 1915 bei Lomcza in Russisch-Polen als Bataillonsführer im Landwehr-Regt. 84.

gering, einmal weil nur wenig Lehrer dafür zur Verfügung standen, dann aber auch weil die vorhandenen Räume nur zum Teil benutzbar waren.

Durch den Krieg war der Bau ins Stocken geraten. Die Einführung der Zentralheizung in das alte Gymnasium dauerte erheblich länger als es unter gewöhnlichen Verhältnissen der Fall gewesen wäre. So blieb nicht nur ein großer Teil der Räume längere Zeit unfertig — einzelne sind auch jetzt noch nicht ganz fertiggestellt — sondern es mußte auch vom 16. 10. 14 bis zum 21. 10. 14 der Unterricht von 11 Uhr ab, am 22. 10. 14 von 10 Uhr ab, am 23. 10. und am 24. 10. 14 ganz ausfallen, da die Zentralheizung erst an dem letztgenannten Tage nachmittags fertig war und in den ungeheizten Räumen nach Michaelis 1914 nur wenige Tage voller, dann nur verkürzter und zuletzt überhaupt kein Unterricht mehr vor Fertigstellung der Zentralheizung möglich war.

Zu solchen Störungen des Unterrichts kam nun noch die starke Besetzung der Klassen VI bis O III, die im allgemeinen in der Kriegszeit nicht geteilt werden konnten und ungeteilt sämtlich eine Schülerzahl hatten, die über die Normalzahl hinausging. Alles das erschwerte natürlich den Unterricht. Doch wurden diese Schwierigkeiten in der Zeit des gewaltigen Ringens, in dem unser Volk steht und im Hinblick auf die Leistungen und die Opfer unserer Krieger im Felde geringer gewertet als es sonst wohl geschehen wäre, und auch die Vertretungen, die durch Krankheit, Beteiligung an der Verwundetenpflege (Oberlehrer Schmitz) und sonstige Behinderungen nötig wurden, gern und freudig übernommen.

Die Schüler der obersten Klassen eilten, von Begeisterung erfüllt, nach Ausbruch des Krieges in großer Zahl zu den Fahnen. 21 sind aus Prima, 6 aus Obersekunda und 5 aus Untersekunda in das Heer eingetreten, und zwar zum größten Teile als Kriegsfreiwillige. Andere, die sich gemeldet hatten, konnten wegen körperlicher Mängel oder wegen Überfüllung nicht eingestellt werden. Viele von denen, die als Kämpfer eingetreten sind, haben bereits schwerere oder leichtere Verwundungen davongetragen. Von einem, Rudolf Popken, wissen wir sicher, daß er auf dem Felde der Ehre gefallen ist: er war als Fahnenjunker eingetreten, zog als Offiziersstellvertreter in das Feld und starb den Heldentod in dem ersten Kampfe, den er mitmachte, bei Bolimow, am 31. 1. 1915. Auch Wilhelm Lüdtke starb für das Vaterland, nachdem er am 24. 2. 15 in Rußland schwer verwundet worden war, im Reservelazarett zu Zeitz. Da er hierher überführt wurde, so konnten ihn seine Lehrer und seine Mitschüler noch zur letzten Ruhestätte begleiten.

Mit den Kollegen, die ins Feld gezogen waren, standen wir in brieflichem Verkehr und nahmen Anteil an ihren Freuden und Leiden. Oberlehrer Hantke, der bald nach seinem Eintritt in Ostpreußen verwundet worden war und während seiner Kur auch nach Hohensalza kam, konnten wir zu unserer Freude hier begrüßen.

Fast häufiger noch als von den Kollegen kamen Nachrichten von den früheren Schülern, die in die Reihen der Kämpfer eingetreten waren, und besonders erfreute es uns, wenn solche die schon längere Zeit vor Ausbruch des Krieges die Schule verlassen hatten, im Felde der früheren Bildungsstätte gedachten und Nachrichten und Grüße sandten.

Der Schulbesuch war in den ersten Wochen des Krieges recht unregelmäßig. Die Nähe der Grenze und der Gedanke an einen Einbruch der Russen wirkten so stark, daß viele Eltern anfangs annahmen, das Gymnasium werde geschlossen und der Unterricht gar nicht aufgenommen werden. Eine größere Zahl fragte auch an und mußte erst benachrichtigt werden, daß der Unterricht am 4. 8. 14 aufgenommen worden sei und unbedingt fortgeführt werden würde. Andere hatten ihre

Kinder nach Orten gebracht, die weiter von der Grenze entfernt liegen. Noch andere, die auswärts wohnten, wollten sich von ihren Kindern nicht trennen und behielten sie zurück. Allmählich wurde die Stimmung ruhiger. Durch Mahnungen, die an die einzelnen Eltern gerichtet wurden, und durch eine allgemeine Aufforderung im „Kujawischen Boten", in der auch auf die Folgen einer weiteren Schulversäumnis hingewiesen wurde, gelang es bald, geordnete Verhältnisse zu schaffen und zu erreichen, daß nur Schüler noch fehlten, die entweder anderswo Unterricht genossen oder sonst aus besonderen Gründen Urlaub erhalten hatten. Urlaub wurde ohne weiteres Schülern erteilt, die ihren Eltern bei den Erntearbeiten helfen sollten; ebenso solchen, die in anderen Betrieben von den Eltern anstelle eingezogener Personen, bis anderweitig Ersatz beschafft werden konnte, zur Abwendung erheblicher Schäden dringend gebraucht wurden. Im allgemeinen hatten auch die Eltern den Wunsch, daß ihre Kinder sobald als irgend möglich, wieder regelmäßig an dem Unterricht teilnahmen, und die Beurlaubungen aus solchem Anlaß hörten wenige Wochen nach Kriegsbeginn fast ganz auf. Unmittelbar nach Kriegsausbruch haben einzelne Gymnasiasten auch bei der Übermittlung von Meldungen, bei der Ausschreibung von Quartierzetteln und bei Erntearbeiten in fremden Betrieben mitgewirkt. Das war jedoch nur ganz kurze Zeit nötig. Insbesondere stellte sich bald heraus, daß für die Erntearbeiten eine mehr als ausreichende Zahl von Arbeitern, die sonst nicht in der Landwirtschaft gearbeitet hatten, aber aus Mangel an Beschäftigung in dem gewohnten Arbeitsgebiete in ihr arbeiten wollten, in unserem Bezirk vorhanden war.

An den Kriegsereignissen, besonders an denen auf dem östlichen Kriegsschauplatz, nahmen wir Daheimgebliebenen, Lehrer wie Schüler, natürlich den lebhaftesten Anteil. Vor der Schlacht bei Tannenberg und in den Tagen unseres Rückzuges von Warschau Anfang November vorigen Jahres, wo mancher unsere Stadt in Besorgnis vor einem Einfall der Russen verließ, war alles in gespannter Erwartung. Wie groß war aber dann der Jubel, als die Nachrichten von den Siegen bei Tannenberg, bei Kutno, bei Lodz und in der ostpreußischen Winterschlacht anlangten! Wenn dann die freudig bewegte Menge durch die Straßen zog, Gott in Dankliedern die Ehre gebend und vaterländische Weisen singend, um dann einer Ansprache auf einem Sammelplatze zu lauschen, so war gewiß unsere Jugend voller Begeisterung dabei. Mehrfach begab sie sich zum Schluß dann noch zu der Wohnung eines ihrer Lehrer, um ihren Empfindungen Ausdruck zu geben.

Nach entscheidenden Siegen im Osten oder im Westen fiel der Tagesunterricht nach entsprechenden Hinweisen in der Schule ganz oder zum Teil aus.

Der Unterricht selbst wurde vielfach in Beziehung zu den Kriegsereignissen gebracht. Dazu bot sich in allen Fächern Gelegenheit, besonders aber im Deutschen, in der Geschichte und in der Erdkunde. So wurde dafür gesorgt, daß die Schüler, besonders die der oberen Klassen, eine genauere Kenntnis von dem Verlauf des Krieges und seinen Zusammenhängen mit wirtschaftlichen Verhältnissen bekamen.

An Unternehmungen zum Besten der Allgemeinheit beteiligten sich unsere Schüler in der Kriegszeit mit besonderer Freude. Sie sammelten für das Rote Kreuz; sie sammelten Patronen, Patronenhülsen und anderes Kriegsgerät, und eine nicht unerhebliche Menge davon konnte als Ergebnis der Sammlung dem hiesigen Garnisonkommando übermittelt werden; sie sammelten endlich mit gutem Erfolge Goldmünzen. Eine größere Zahl von Schülern erhielt für diesen letzteren Zweck Bescheinigungen mit der Unterschrift des Direktors und dem Stempel der Schule, die nach Schluß der Sammlung wieder abgeliefert werden mußten. In den Bescheinigungen

war gesagt, daß die Inhaber zum Sammeln ermächtigt seien, daß die Gymnasialkasse für das Goldgeld einen entsprechenden Betrag in Papiergeld durch Vermittelung der Schüler zahlen werde und daß das Goldgeld an die Reichsbank abgeführt werden würde. Die Schüler betrieben die Sache mit großem Eifer, und es gelang ihnen, in der Stadt und in der Umgegend vom 3. 3. 15 ab in etwa zwei Wochen 25 658 ℳ Goldgeld zu sammeln, die der Reichsbank zugeführt werden konnten. Vor dieser Hauptsammlung waren schon 1030 ℳ in Gold, die bei der Schulgeldzahlung und sonst von Schülern eingeliefert worden waren, an die Reichsbank abgegeben worden. Mit Rücksicht auf die viele Mühe, welche die Schüler aufgewendet hatten, wurde 3 Klassen, welche — auf den Kopf berechnet — am meisten Goldgeld herbeigebracht hatten, ein ganzer, den übrigen Klassen ein halber Schultag zur Erholung freigegeben.

Vom 6. 11. 14 nachmittags bis zum 28. 11. 14 einschließlich weilte in den Räumen des Gymnasiums das Oberkommando des 9. Heeres (v. Mackensen). In dieser Zeit mußte der Unterricht ausfallen. Dem Einzuge des Oberkommandos in unsere Räume hatten wir es übrigens zu verdanken, daß die Beleuchtungskörper für die elektrische Anlage innerhalb eines Tages in allen Räumen, für die elektrisches Licht vorgesehen war, angebracht wurden, sodaß wir — abgesehen von der Aula — 107 Flammen, statt der vorher vorhandenen 14, die auch nur mit Mühe beschafft worden waren, zur Verfügung hatten.

Das Sedanfest feierten wir 1914 klassenweise, da die Aula noch nicht fertig war. Die Feier wurde natürlich in enge Beziehung zu dem gegenwärtigen Kriege gebracht.

Am 27. 1. 1915 konnten wir dann, nachdem wir längere Zeit entweder Klassenfeiern hatten veranstalten oder die Feiern in die Turnhalle hatten verlegen müssen, endlich wieder eine gemeinsame Feier in dem Gymnasium selbst abhalten, und unsere Gäste zur Kaisersgeburtstagsfeier in den weiten und freundlichen Räumen des Neubaues und in der neuen, schönen Aula empfangen. Die Festrede hielt an diesem Tage der Direktor über „Die Verdienste unseres Kaisers um unsere Kriegsrüstung“.

Die vorgetragenen Gesänge und Gedichte waren auch bei dieser Feier den Kriegsereignissen angepaßt.

Als Geschenke Sr. Majestät erhielten am 27. 1. 15 Szalkowski O I: Büchmann, Geflügelte Worte; Beilfuß U I: Graf zu Reventlow, Deutschland zur See; Weißer O II: Marinealbum 1914.

Außer 3 Notreifeprüfungen hatten wir noch — am 24. 2. 15 — die regelmäßige Ostereifeprüfung (s. IV 3), der sich 8 Oberprimaner unterzogen und die unter dem Vorsitz des Herrn Provinzialschulrats Dr. Gerstenberg stattfand.

Die Prüflinge bestanden sämtlich. Die Schüler, welche eine Notprüfung gemacht hatten, wurden unmittelbar nach deren Schluß entlassen. Die 8 Prüflinge vom 24. 2. sind am 13. 3. in dem Raume der jetzigen I und im Beisein ihrer Mitschüler aus U I entlassen worden.

Mehrere Herren des Lehrkörpers werden voraussichtlich zu Beginn des kommenden Schuljahres noch eingezogen werden. Wie der Unterricht sich dann gestalten wird, steht noch dahin. Wahrscheinlich wird Ersatz beschafft werden können, und jedenfalls wird der Unterricht, wenn auch vielleicht in unverändertem Umfang, aufrecht erhalten werden. In nicht zu ferner Zeit wird ja, wie wir hoffen dürfen, der Friede kommen, der Friede in Ehren, der Friede nach siegreichem Kriege, den wir alle wünschen und um den wir Gott bitten.

Zum Schluß sage ich allen denen, die uns durch Zuwendungen erfreut haben, auch an dieser Stelle herzlichen Dank.

# IV. Statistische Mitteilungen.

## 1. Zahl und Durchschnittsalter der Schüler.

| | OI | UI | OII A | OII B | UII A | UII B | OIII A | OIII B | UIII A | UIII B | IVA | IVB | VA | VB | VIA | VIB | Sa. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. Am Anfang des Sommerhalbjahres | 25 | 22 | 29 | | 24 | 23 | 29 | 26 | 29 | 29 | 32 | 32 | 27 | 30 | 29 | 30 | 416 |
| 2. Am Anfang des Winterhalbjahres | 27 | | 20 | | 36 | | 53 | | 54 | | 56 | | 54 | | 53 | | 353 |
| 3. Am 1. Februar 1915 . . . | 25 | | 20 | | 36 | | 53 | | 54 | | 57 | | 54 | | 53 | | 352 |
| 4. Durchschnittsalter am 1. Februar 1915 | 19,4 | 18,5 | 17,9 | | 16,8 | | 16 | | 14,3 | | 13,3 | | 12,3 | | 10,9 | | |

## 2. Religions-, Staatsangehörigkeits- und Heimatsverhältnisse der Schüler.

| | Konfession bezw. Religion | | | | Staatsangehörigkeit | | | Heimat | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | evangelisch | katholisch | Dissidenten | jüdisch | Preußen | nicht preußische Reichsangehörige | Ausländer | aus dem Schulort | von außerhalb |
| 1. Am Anfang des Sommerhalbjahres . . . . . | 182 | 206 | — | 28 | 414 | — | 2 | 236 | 180 |
| 2. Am Anfang des Winterhalbjahres . . . . . | 146 | 180 | — | 27 | 353 | — | — | 208 | 145 |
| 3. Am 1. Februar 1915 . . . . . | 145 | 179 | — | 28 | 352 | — | — | 209 | 143 |

Am 1. Februar 1915 hatten von den auswärtigen Schülern 73 volle Pension.

## 3 a. Uebersicht über die Abiturienten, welche am 8. August 1914 die Notreifeprüfung gemacht haben.

| Lfd. Nr. | Namen und Vornamen | Tag der Geburt | und Ort der Geburt | Konf. bezw. Rel. | Des Vaters Stand | Des Vaters Wohnort | Wieviel Jahre im Gym | Wieviel Jahre in der Prima | Wieviel Jahre in der OI | Gewählter Beruf |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Buresch, Charilaos | 29.11. 90 | Leipzig | ev. | † Privatdozent | Leipzig | 2½ | 4½ | 3½ | ins Heer eingetreten |
| 2 | Fritsch, Erich | 12.5. 95 | Hohensalza | ev. | Fleischermeister | Hohensalza | 10½ | 2½ | 1½ | " |
| 3 | Jagodzinski, Lucyan | 7.12. 94 | Hohensalza | kath. | Kaufmann | Hohensalza | 10½ | 2½ | 1 | " |
| 4 | Liebert, Gustav | 29.9. 94 | Bartschin, Kr. Schubin | ev. | Postsekretär | Hohensalza | 9½ | 2½ | 1½ | " |
| 5 | Lüdtke, Wilhelm [3]) | 26.5. 95 | Charlottenburg | ev. | Kriminal-Kommissar | Hohensalza | 7½ | 2½ | 1½ | " |
| 6 | Lüttke, Erwin | 21.7. 94 | Joachimsdorf Kr. Schubin | ev. | Lehrer | Wolitz, Kr. Schubin | 6½ | 2½ | 1½ | " |
| 7 | Muchlinsky, Werner | 20.10. 95 | Josephsdorf, Kr. Culm, Westpr. | ev. | Administrator | Jankowo bei Pakosch | 5½ | 2½ | ½ | " |
| 8 | Radtke, Alexander | 26.11. 93 | Hohensalza | kath. | Kaufmann | Hohensalza | 11½ | 2½ | ½ | " |

## 3 b. Uebersicht über die Abiturienten, welche am 14. August 1914 die Notreifeprüfung gemacht haben.

| Lfd. Nr. | Namen und Vornamen | Tag der Geburt | und Ort der Geburt | Konf. bezw. Rel. | Des Vaters Stand | Des Vaters Wohnort | Wieviel Jahre im Gym. | Wieviel Jahre in der Prima | Wieviel Jahre in der OI | Gewählter Beruf |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Fritsch, Kurt | 19.4. 97 | Hohensalza | ev. | Fleischermeister | Hohensalza | 8½ | 1½ | ½ | ins Heer eingetreten |
| 2 | Hoppe, Walter | 11.6. 95 | Braknitz, Kr. Kolmar i. P. | ev. | Lehrer | Kruschwitz | 5½ | 1½ | ½ | " |
| 3 | Palak, Bernhard | 10.4. 93 | Szerzawy, Kr. Mogilno | kath. | Hausbesitzer | Hohensalza | 6½ | 1½ | — | " |
| 4 | Popken, Rudolf [1]) | 28.9. 95 | Bederkesa, Pr. Hannover | ev. | Seminardirektor | Hohensalza | 2 | 1½ | ½ | " |
| 5 | Schönborn, Edmund | 1.11. 93 | Rozniaty, Kr. Strelno | kath. | Lehrer | Rozniaty, Kr. Strelno | 6½ | 2½ | ½ | " |
| 6 | Sobierajski, Stefan [2]) | 18.8. 94 | Hohensalza | kath. | Lehrer | Hohensalza | 10½ | 2½ | 1½ | i. d. Sanitätsdienst eingetr. |
| 7 | Stukowski, Joseph | 8.11. 94 | Schneidemühl | kath. | Rektor | Schneidemühl | ½ | 2½ | ½ | ins Heer eingetreten |
| 8 | Volkmann, Richard | 13.2. 94 | Hohensalza | ev. | Maurer- und Zimmermstr. | Hohensalza | 10½ | 1½ | — | " |
| 9 | Wiener, Martin | 11.1. 94 | Hohensalza | mos. | Kaufmann | Hohensalza | 9½ | 1½ | ½ | " |

[1]) Fiel Anfang Februar 1915 bei Bolimow.
[2]) Starb kurze Zeit nach der Reifeprüfung.
[3]) S. III.

## 3 c. Uebersicht über die Abiturienten, welche am 29. Januar 1915 die Notreifeprüfung gemacht haben.

| Lfd. Nr. | Namen und Vornamen | Tag der Geburt | und Ort der Geburt | Konf. bezw. Rel. | Des Vaters Stand | Des Vaters Wohnort | Wieviel Jahre im Gym. | Wieviel Jahre in der Prima | Wieviel Jahre in der OI | Gewählter Beruf |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Kazmierczak, Maryan | 27.11. 93 | Hohensalza | kath. | Rittergutsbesitzer | Plonkowo, Kr. Hohensalza | 13 | 3 | 1 | ins Heer einberufen |
| 2 | Sobocinski, Vinzent | 18.7. 94 | Gr.-Morin, Kr. Hohensalza | kath. | Gutsbesitzer | Gr.-Morin, Kr. Hohensalza | 10 | 2 | 1 | „ |

## 3 d. Uebersicht über die Abiturienten zu Ostern 1915.

| Lfd. Nr. | Namen und Vornamen | Tag der Geburt | und Ort der Geburt | Konf. bezw. Rel. | Des Vaters Stand | Des Vaters Wohnort | Wieviel Jahre im Gym. | Wieviel Jahre in der Prima | Wieviel Jahre in der OI | Gewählter Beruf |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | v. Dambski, Stefan | 30.6. 93 | Ludzisk Gut Krs. Strelno | kath. | Rittergutsbesitzer | Ludzisk, Kr. Strelno | 12 | 3 | 1½ | Landwirt |
| 2 | Kaczmarkiewicz, Kasimir | 21.6. 96 | Thorn | kath. | Färbermeister | Hohensalza | 9 | 2 | 1 | Bankfach |
| 3 | Krzyminski, Witold | 24.1. 95 | Hohensalza | kath. | Arzt | Hohensalza | 10 | 2 | 1 | Theologie |
| 4 | Lewandowski, Edmund | 14.2. 97 | Meridan-Cona in Nordamerika | kath. | Kaufmann | Hohensalza | 9 | 2 | 1 | Theologie |
| 5 | Mielcarek, Josef | 11.2. 95 | Jakschitz, Kr. Hohensalza | kath. | Gutsbesitzer | Truszczyzna bei Argenau | 11 | 3 | 1 | Bankfach |
| 6 | Steinhardt, Georg | 10.1. 96 | Pakosch | mos. | Kaufmann | Hohensalza | 7 | 2 | 1 | Jura |
| 7 | Stiege, Hans | 11.3. 97 | Czarnikau | ev. | †Justizrat | Hohensalza | 9 | 2 | 1 | Höheres Postfach |
| 8 | Szalkowski, Janusch | 24.6. 95 | Hohensalza | kath. | Drechslermeister | Hohensalza | 8 | 2 | 1 | Landmesser |

# V. Die Lehrmittelsammlungen.

## 1. Die Büchereien.

### a) Lehrerbücherei.

**Geschenkt wurden:** Vom Herrn Verleger: Günther, Naturschutz; Ackermann, G. K. Barth, der Lützower und Pestalozzianer; Kultur der Gegenwart, 4. Teil, Band 12: Technik des Kriegswesens. Vom Verfasser: Schmidt, terminologische Studien. Vom Herrn Oberpräsidenten: Die Werke Friedrichs des Großen. (Berlin, Hobbing.) Vom Herrn Minister: Moritz, Schulwesen

in Deutsch-Südwest-Afrika: Jahrbuch der Auskunftsstelle für Schulwesen, 1. Jahrgang; Jahrbuch für Volks- und Jugendspiele, Jahrgang 1914; Tägliche Andachten für die Kriegszeit; Deutsche Kriegslieder, ges. von A. und M. de Lagarde.

**Aus Anstaltsmitteln wurden beschafft:** Hunt, Tragicorum Gracorum Fragmenta papyr; Baur, Urgeschichten, Moses, Josua und Richter; Uhle, Platons Verteidigungsrede des Socrates; Gomperz, Griech. Denker, Bd. 2 u. 3; Friedjung, Österreich von 1848—60; Natorp, Platos Ideenlehre; Catulli Voroneusis liber, erkl. von Friedrich; Müller, Socrates geschildert von seinen Schülern; Terwelp, Reden und Briefe der Apostel; Brück, Lehrbuch der Kirchengeschichte; Ambrosius und Hinkel, Aus allen Zonen; Phoenix-Verlag, Preisgekröntes Aufsatzbuch; Fischer, Mittelmeerbilder, 2 Bände; Pol. Correspondenz Friedrichs des Großen, Band 36; Wilhelm von Humboldts Gs. Werke, Band 1, 7 und 10; Wilamowitz, Sappho und Simonides; D. Schaefer, Deutsche Geschichte; Sombart, Die d. Volkswirtschaft; Hampe, Deutsche Kaisergeschichte in der Zeit der Salier und Staufer; Foerster, Jugendlehre; Lit. Ratgeber des Dürerbundes; Müller, Ästhet. Commentar zu den Tragödien des Sophocles; Deutsche Reden in schwerer Zeit; Rothe, Der augenblickliche Stand der homerischen Frage; Swoboda, Lehrbuch der griechischen Staatsaltertümer.

### b) Schülerbücherei.

**Aus Anstaltsmitteln wurden beschafft:** Morawski, Abende am Genfer See; Sawicki, Die Wahrheit des Christentums; Schulte, Unsere Lebensideale; Holl, Sturm und Steuer; Pesch, Christliche Lebensphilosophie; Joergensen, Franz von Assisi; Roh, Was ist Christus? Holl, Wahn und Wahrheit; Nauticus 1914; Arnim, Des Knaben Wunderhorn; Avenarius, Hausbuch deutscher Lyrik; Avenarius, Balladenbuch; Bartels, Die Dithmarscher; Droste-Hülshoff, Werke; Kurz, Schillers Heimatjahre; Handel—Mazetti, Jesse und Maria; Lienhard: Oberlin; Meinhold: Die Bernsteinhexe; Mayr; Erzählungen aus dem Ries; Matthias: Bismarck; Cornill, Der israelitische Prophetismus; Baum—Geyer, Kirchengeschichte; Sealsfield, Das Kajütenbuch; Dante, Göttliche Komödie; Lagerlöf, Jerusalem; Behaghel, Die deutsche Sprache; Wustmann, Sprachdummheiten; Bartels, Freie Menschen; Dreger, Berufswahl im Staatsdienste; Conscience, Der Löwe von Flandern; Fontane, Kriegsgefangen; Kotzde, Im Schillschen Zuge; Sperl, Die Söhne des Herrn Budivoj; Blencke, Alfred Krupp; Vollmer, Der deutsch-franz. Krieg; Hagenbeck, Von Menschen und Tieren; Biernatzki, Die Schiffbrüchigen; Eyth, Geld und Erfahrung; Fauth, Dr. Martin Luthers Leben; Gotthelf, Der Knabe Tell; Biedenkapp, Graf Zeppelin; Schalk, Die bunte Kuh von Flandern.

### c) Geschichtlich-erdkundliche Sammlung.

Vier Anschauungsbilder für den Geschichtsunterricht aus dem Verlag von Pichler; Saupe, Staatskunde; 130 Diapositive, aus dem Verlage von Benzinger-Stuttgart über die europäischen Länder.

### d) Musikaliensammlung.

Seiffert A., Kampflied 1914; Jüttner P. op. 6, Deutsches Matrosenlied; Kahle, Th. op. 13, Psalm 98, gem. Chor mit Orgelbegleitung; Grell, Motetten op. 13, 34, 39, zur Ergänzung 40 Stück.

### e) Physikalisches Kabinett.

Wehneltunterbrecher, Röntgenröhre, Wheatstonesche Brücke, Hebelpyrometer, Thermometer, Achatmörser.

**f) Sammlung der Turngeräte.**

5 Fußbälle, 2 Faustbälle, 1 eiserner Barren für die Turnhalle.

# VI. Stiftungen und Unterstützungen.

Die Anstalt besitzt vier in Königliche Verwaltung übergegangene Stiftungen.

1. Der **„Hohensalzaer Schüler-Unterstützungsfonds"** belief sich am Schlusse des Schuljahres 1913/14 (Vergl. Progr. Ostern 1914) auf 1 799,36 M. und besteht jetzt aus:

| | | |
|---|---|---|
| 1. einer $3\frac{1}{2}$ %igen Staatsschuldbuchforderung über | | 1 200,00 M. |
| 2. einer 4 %igen Staatsschuldbuchforderung über | | 400,00 M. |
| 3. dem Sparkassenbuche Nr. 17 der hiesigen Kreissparkasse 1913/14 mit einem Bestande von | | 199,36 M. |
| Dazu kamen im Jahre 1914/15 im ganzen | 14,97 M. | |
| nämlich: a) an ersparten Kapitalzinsen, dem Sparkassenbuch Nr. 17 zugeschrieben | | 8,00 M. |
| b) an Sparkassenzinsen für April 1914 bis Ende März 1915 | | 6,97 M. |
| Mithin Bestand am 1. 4. 15 | | 1 814,33 M. |

Aus den Zinsen dieses Fonds haben in diesem Schuljahre 2 Schüler je 25 M. Unterstützung erhalten.

2. Die **„Professor Schmidt-Stiftung"** betrug am Schlusse des Schuljahres 1913/14 (Vergl. Progr. 1914) . . . . . 6 686,09 M. und besteht jetzt aus:

| | | |
|---|---|---|
| 1. einer $3\frac{1}{2}$ %igen Staatsschuldbuchforderung über | | 1 800,00 M. |
| 2. einer 4 %igen Staatsschuldbuchforderung über | | 3 500,00 M. |
| 3. zwei Hypotheken-Dokumenten im Gesamtbetrage von | | 393,00 M. |
| 4. dem Kreissparkassenbuche Nr. 9 585 am Schlusse des Rechnungsjahres 1913/14 mit einem Bestande von | | 993,09 M. |
| Dazu kamen im Rechnungsjahre 1914/15 im ganzen | 79,82 M. | |
| nämlich: a) an ersparten Zinsen aus den beiden Staatsschuldbuchforderungen und den Hypotheken-Darlehen, dem Kreissparkassenbuch Nr. 9 585 zugeschrieben | | 45,08 M. |
| b) Sparkassenzinsen für April 1914 bis Ende März 1915 | | 34,74 M. |
| Mithin Bestand am 1. 4. 15 | | 6 765,91 M. |

Aus den Zinsen dieser Stiftung sind 3 Schüler mit je 60 M. unterstützt worden.

3. Der **„Pämien- und Stipendienfonds"** belief sich am Jahresschlusse 1913/14 (Vergl. Progr. 1914) auf . . . . . 1 856,09 M. und besteht jetzt aus:

| | |
|---|---|
| 1. einer 4 %igen Staatsschuldbuchforderung von | 1 400,00 M. |
| 2. dem Kreissparkassenbuche Nr. 1 363 am Jahresschlusse 1913/14 mit einem Bestande von | 456,09 M. |
| Zu übertragen | 1 856,09 M. |

| | |
|---|---|
| Uebertrag | 1 856,09 M. |
| 3. ersparten Zinsen aus der unter Nr. 1 bezeichneten Staatsschuldbuchforderung, dem Sparkassenbuche Nr. 1 363 zugeschrieben . . . . . | 6,00 M. |
| 4. Sparkassenzinsen für April 1914 bis Ende März 1915 . . . . . | 15,96 M. |
| Mithin Bestand am 1. 4. 15. | 1 878,05 M. |

Aus den Zinsen dieser Stiftung hat in diesem Schuljahre 1 Schüler eine Unterstützung von 50 M. erhalten.

4. Der Justizrat **Dr. Jacob-Levy-Stipendienfonds** besteht jetzt aus:

| | |
|---|---|
| 1. 4 %igen Schuldverschreibungen der Stadt Charlottenburg über . . . . | 7 000,00 M. |
| 2. einer 4 %igen Schuldverschreibung der Stadt Cöpenik über . . . . . | 1 000,00 M. |
| 3. einer 3 ½ %igen Staatsschuldbuchforderung über . . . . . | 2 000,00 M. |
| 4. dem Sparkassenbuch Nr. 23 432 der hiesigen Kreissparkasse — einschl. der zugeschriebenen Sparkassenzinsen von April 1914 bis Ende März 1915 (3,15 M.) — mit einem Bestande von zusammen . . . . . | 93,50 M. |
| Mithin Bestand am 1. 4. 15 | 10 093,50 M. |

Aus den Zinsen dieses Fonds hat in dem gegenwärtigen Schuljahre ein Abiturient der Anstalt, der Student des Maschinenbaufachs Zeigner — z. Zt im Felde —, eine Unterstützung von 390 M. erhalten.

# VII. Besondere Mitteilungen an unsere Schüler und an deren Eltern.

Das neue Schuljahr beginnt am Dienstag, 13. 4. 15. Schüler, welche die Anstalt verlassen wollen, müssen spätestens am ersten Schultage eines Vierteljahres abgemeldet werden, zu Ostern d. Js., also spätestens am 13. 4.

Anmeldungen neuer Schüler nimmt der Direktor an Wochentagen von 12—1 Uhr in seinem Amtszimmer entgegen. Die Anmeldung kann auch schriftlich erfolgen. Geburtsschein, ev. Taufschein, Impfschein oder Wiederimpfschein, ferner Zeugnisse über die Vorbildung und Führung sind bei der Anmeldung einzureichen.

Knaben, welche noch nicht 9 Jahre alt sind, werden in der Regel nicht aufgenommen. Die Altersgrenze für den Eintritt in die VI ist 12 Jahre, die für den Eintritt in die V 13 und die für den Eintritt in die IV 15 Jahre. Dementsprechend werden in die O II, U I und O I Schüler nicht aufgenommen, die über 19 bezw. 20 oder 21 Jahre alt sind.

Sind die Altersgrenzen nicht überschritten und befriedigen die sonstigen Nachweisungen, so erfolgt die Zulassung zur Aufnahmeprüfung. Diese wird am Montag, 12. 4., vormittags 9 Uhr im Gymnasium stattfinden. Zu der Prüfung sind Schreibgeräte mitzubringen.

Nur Schüler, welche bereits eine höhere Lehranstalt für die männliche Jugend besucht haben, können ohne Prüfung ihrer Kenntnisse aufgenommen werden. Sie werden, falls gegen ihre Aufnahme nicht sonst Bedenken vorliegen, der Klasse zugewiesen, für die sie nach ihrem Abgangszeugnis reif sind.

Für die Aufnahme in die VI wird verlangt:

a) die Fähigkeit, Stücke in deutscher und lateinischer Druckschrift mit Verständnis zu lesen, Kenntnis der Redeteile und des einfachen Satzes,
b) Die Fähigkeit, leichtere Diktate richtig aufzufassen und im ganzen fehlerlos niederzuschreiben,
c) Geläufigkeit in den vier Spezies mit unbenannten Zahlen,
d) die elementarsten Kenntnisse in der Erdkunde,
e) einige Bekanntschaft mit den Geschichten des Alten Testaments und mit dem Leben Jesu (für christliche Schüler).

Die Anforderungen für die übrigen Klassen sind bestimmt durch die Lehrpläne von 1901.

Die eingereichten Papiere — bis auf die Abgangszeugnisse von höheren Lehranstalten — werden spätestens 4 Wochen nach der Aufnahmeprüfung zurückgegeben.

Kein Schüler darf einer Pflegestelle überwiesen werden, bevor der Direktor die Wahl genehmigt hat. Es ist also auch zu jedem Wechsel der Pflegestelle die vorherige Genehmigung des Direktors erforderlich.

Das Schulgeld beträgt für die Klassen O II bis O I 150 Mark, für die übrigen Klassen 130 Mark jährlich. Es ist vierteljährlich im voraus an einem Tage, der den Schülern jedesmal besonders mitgeteilt wird, zu entrichten. Auch für Schüler, welche durch Krankheit oder andere Anlässe vom Schulbesuch zurückgehalten werden, ist das Schulgeld bis spätestens 8 Tage nach Beginn des Vierteljahres an die Kasse zu zahlen. Die Kasse hat ein Postscheckkonto — Danzig Nr. 2412 — und Anschluß an den Reichsbankgiroverkehr. Neu aufgenommene Schüler haben ein Einschreibegeld von 3 Mark zu zahlen; doch sind Söhne von Beamten und Heeresangehörigen, welche infolge der Versetzung ihrer Väter von einer anderen höheren Lehranstalt in eine Klasse des hiesigen Gymnasiums übergehen, von der Zahlung dieser Einschreibegebühr befreit.

Bis zu 10 Prozent des von den Schülern des Gymnasiums nach den angegebenen Sätzen zu zahlenden Schulgeldes können durch Gewährung von Freischule erlassen werden. Freischule wird nur würdigen und bedürftigen Schülern und im allgemeinen nur Schülern der oberen und der mittleren Klassen (O I bis U III einschließlich) gewährt. Eine gewisse Nachsicht kann bei der Prüfung der Bedürftigkeit obwalten, wenn die Gewährung der Freischule für einen Schüler beantragt wird, der noch zwei oder mehr Brüder auf dem Gymnasium hat.

Gesuche um Schulgeldbefreiung sind schriftlich an den Direktor zu richten. Über die Befreiung entscheidet die Gesamtkonferenz, und zwar wird über die Befreiung in der Regel zweimal im Jahre, zu Beginn des Sommer- und des Winterhalbjahres, abgesehen von Einzelbefreiungen, beraten. Von der Verleihung oder Entziehung einer Freistelle werden die Eltern amtlich benachrichtigt. Erfolgt auf ein Gesuch um Freischule kein Bescheid, so ist daraus zu entnehmen, daß die Freischule nicht hat gewährt werden können.

Ist ein Schüler durch Krankheit verhindert, die Schule zu besuchen, so muß dies dem Klassenleiter von den Eltern oder Pflegern sobald als möglich, in der Regel am ersten Tage der Versäumnis, schriftlich angezeigt werden. Bei der Wiederkehr hat sich der Schüler, wenn er länger als einen Tag gefehlt hat, durch eine weitere Bescheinigung über die Dauer der Behinderung auszuweisen. Soll der Unterrichtsbesuch aus anderen Gründen ausgesetzt werden, so ist vorher die Erlaubnis dazu einzuholen.

Die Schüler haben sich mit allen Anliegen, Urlaubsgesuchen u. a., zunächst an ihre Herren Klassenleiter, nicht unmittelbar an den Direktor zu wenden.

Tritt in einem Hausstand, zu dem Schüler der Anstalt gehören, oder in einem Hause, in dem solche Schüler wohnen, eine ansteckende Krankheit auf, so haben die Eltern oder Pfleger dies unverzüglich dem Direktor anzuzeigen.

Zur Erteilung von Privatunterricht bedürfen die Schüler einer besonderen Erlaubnis. Sie haben, wenn sie diese nachsuchen, darzutun, daß ihre Eltern damit einverstanden sind, daß sie die betreffenden Privatstunden übernehmen.

Jedes Hinaustreten in die Öffentlichkeit (Mitwirkung bei Aufführungen, Kundgebungen in Zeitungen u. a.) ist den Schülern ohne besondere Erlaubnis untersagt. Öffentliche Lokale dürfen sie nur in Begleitung Erwachsener, in erster Linie erwachsener Angehörigen, besuchen. Von der Absicht, eine öffentliche Aufführung zu besuchen, haben sie ihrem Herrn Klassenleiter Anzeige zu machen.

Zeugnisse werden den Schülern dreimal im Jahre, zu Michaelis, zu Weihnachten und zu Ostern, ausgehändigt. Vor den großen Ferien werden nur den Schülern, welche erheblich zurückgeblieben sind und eines besonderen Ansporns bedürfen, Zeugnisse ausgestellt. Diese Sonderzeugnisse werden den Eltern als portopflichtige Dienstsachen zugesandt.

Der Direktor ist in dienstlichen Angelegenheiten an Werktagen im allgemeinen von 12—1 Uhr in seinem Amtszimmer zu sprechen. Sein Vertreter in Behinderungsfällen ist Herr Professor Masuch.

Die Sprechstunden der Herren des Kollegiums sind auf einer Tafel verzeichnet, die bei dem Schuldiener eingesehen werden kann.

Die Schüler sollen ohne zwingenden Grund in den Wintermonaten Oktober bis März nicht nach 8 Uhr, von Anfang Juni bis Mitte August nicht nach 10 Uhr, in der übrigen Zeit des Jahres nicht nach 9 Uhr außerhalb ihrer Wohnung sein.

Schulfrei sind in jedem Schuljahre, abgesehen von den Ferientagen, dem Himmelfahrtstage und dem Bußtage der 6. 1., 2. 2., 23. 4., der Fronleichnamstag, der 29. 6., 1. 11., und 8. 12. Am Aschermittwoch und am 2. 11. fällt der Unterricht von 8—10 Uhr aus. Am Reformationstage sind die evangelischen Lehrer und Schüler unterrichtsfrei, damit sie an dem in die Unterrichtszeit fallenden Gottesdienst des Tages teilnehmen können.

Es ist aus Rücksicht auf den Stundenplan dringend zu wünschen, daß der Konfirmandenunterricht der Schüler des Gymnasiums von den Eltern in die Zeit verlegt werde, in der sich ihre Söhne in der Untertertia oder in der Obertertia befinden.

Der Allgemeine Deutsche Versicherungsverein zu Stuttgart hat für seine Schülerversicherung neue Bedingungen aufgestellt, die erheblich ungünstiger sind als die bisherigen. Es ist daher zweifelhaft, ob die Weiterversicherung von der Schule wird empfohlen werden können.

**Hohensalza**, im März 1915.

**E. Viedt.**

Die Schüler haben sich mit allen Anlie an ihre Herren Klassenleiter, nicht unmittelbar an den Di

Tritt in einem Hausstand, zu dem Schül n Hause, in dem solche Schüler wohnen, eine ansteckende K r Pfleger dies unverzüglich dem Direktor anzuzeigen.

Zur Erteilung von Privatunterricht bedi rlaubnis. Sie haben, wenn sie diese nachsuchen, darzutun, ind, daß sie die betreffenden Privatstunden übernehmen.

Jedes Hinaustreten in die Öffentlichkeit gebungen in Zeitungen u. a.) ist den Schülern ohne beso he Lokale dürfen sie nur in Begleitung Erwachsener, in e besuchen. Von der Absicht, eine öffentliche Aufführung zu assenleiter Anzeige zu machen.

Zeugnisse werden den Schülern dreimal chten und zu Ostern, ausgehändigt. Vor den großen Fer erheblich zurückgeblieben sind und eines besonderen An lt. Diese Sonderzeugnisse werden den Eltern als portopfli

Der Direktor ist in dienstlichen Angel einen von 12—1 Uhr in seinem Amtszimmer zu sprechen. ist Herr Professor M a s u ch.

Die Sprechstunden der Herren des Koll et, die bei dem Schuldiener eingesehen werden kann.

Die Schüler sollen ohne zwingenden G bis März nicht nach 8 Uhr, von Anfang Juni bis Mitte rigen Zeit des Jahres nicht nach 9 Uhr außerhalb ihrer

Schulfrei sind in jedem Schuljahre, abg melfahrts- tage und dem Bußtage der 6. 1., 2. 2., 23. 4., 11., und 8. 12. Am Aschermittwoch und am 2. 11. f aus. Am Reformationstage sind die evangelischen Lehrer e an dem in die Unterrichtszeit fallenden Gottesdienst des

Es ist aus Rücksicht auf den Stundenpla firmanden- unterricht der Schüler des Gymnasiums von de n der sich ihre Söhne in der Untertertia oder in der Obe

Der Allgemeine Deutsche Versicherungsve ersicherung neue Bedingungen aufgestellt, die erheblich un ist daher zweifelhaft, ob die Weiterversicherung von der

**Hohensalza,** im März 1915.

lt.